

वसंत 2

पाठ 4 (कठपुतली)

कविता का सार :

प्रस्तुत पाठ कठपुतली में कवि भवानी प्रसाद मिश्र जी के अनुसार हजारों सालों से धागे में बंधी और दूसरों के इशारे पर नाचती कठपुतली को गुस्सा आ जाता है। वे इन धागों को तोड़ कर आजाद होना चाहती है और अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है। उसकी बात सुनकर बाकी कठपुतलियाँ भी आजाद होने के लिए तड़प उठती हैं। वे सब अब अपनी मर्जी से काम करना चाहती हैं और इसके लिए वे विद्रोह करने के लिए भी तैयार हैं। जब पहली कठपुतली यह सब देखती है तो वो सोचने लगती है कि हाय! उसने यह क्या कर डाला। अब सबकी आजादी की जिम्मेदारी उसकी हो गई है। साथ ही वह असमंजस में पड़ जाती है कि क्या वे सब इस स्वतंत्रता को संभाल पायेंगी? क्या वे अपने पैरों पर खड़ी रह पायेंगी? आदि। अंततः वह यह विचार करती है कि उसे सोच समझ कर कदम उठाना चाहिए।